CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

शोध-पत्र

Received 11.02.2023 Reviewed 17.02.2023 Accepted 29.03.2023

नई शिक्षा नीति 2020 तथा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता का अध्ययन

* मनोज कुमार
डॉ. रेवत सिंह

मुख्य शब्द - *सामाजिक आर्थिक व राजनीति लोकतंत्र, स्वाधीनता संग्राम, सौहार्दपरक भ्रातृत्व आदि.*

सारांश

संस्कृति, सभ्यता और विकास द्वारा ही मानव जाति की पहचान होती हैं तथा मानव जाति का मूल्यांकन किया जाता है। व्यक्ति के अनुभव तथा उसके विचार उसकी स्वयं की देन न होकर इतिहास तथा उन सभी महापुरूषों के शैक्षणिक विचारों का पुंज है, जिन्हे उसने अपने सम्पूर्ण जीवन में पढा है। हम भी इन महापुरूषों के शैक्षणिक विचारों का अनुसरण करके अपने तथा अपने देश के उज्ज्वल का निर्माण कर सकते है।

34 वर्षो के बाद नई शिक्षा नीति को लागू किया जा रहा है। नई शिक्षा नीति की प्रमुख बाते है, मातृभाषा में शिक्षा, कौशल शिक्षा, तकनीकी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा इत्यादि इन्ही बातों का जिक्र कही न कही लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों में देखने को मिलता है।

*इसी उद्देश्य को लेकर प्रस्तुत शोध पत्र में **लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों तथा नई शिक्षा नीति की वर्तमान युग में प्रासंगिकता का अध्ययन** शोध पत्र को प्रस्तुत किया गया है।*

प्रस्तावना

किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था वहाँ की राजनीतिक व्यवस्था तथा वहाँ के विचारकों व दार्शनिकों से अवश्य प्रभावित होती है तथा इसके साथ–साथ दार्शनिकों एवं विचारकों के आदर्शो व विचारों से प्रभावित शिक्षा प्रणाली कई शताब्दियों तक जीवित रहती है। हमारी प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में यही बात देखने को मिलती है। इसके लिए प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं है कि भारतीय शिक्षा में आज भी हमारे प्राचीन शिक्षा दार्शनिकों के विचारों एवं आदर्शो की झलक अवश्य दिखाई पड़ती है।

[12]शिक्षा मानव विकास का सर्वोत्तम साधन हैं वर्तमान समय में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति उत्तम शिक्षा से ही संभव है। शिक्षा की प्रक्रिया में विभिन्न युगों में देशकाल एवं परिस्थितियों के अनुसार अलग–अलग पक्षों को प्राथमिकता दी जाती रही है।

[22]भारत में शिक्षा का इतिहास बहुत समग्र रहा है। प्राचीनकाल में भारत विश्व गुरू के रूप में जाना जाता है और यहाँ की शिक्षण संस्थाएँ विश्व प्रसिद्ध संस्थाएँ रही है। यहाँ के विश्वविद्यालयों में विश्व के कोने–कोने से विद्यार्थी अध्ययन करने आते थे। उस समय शिक्षा की व्यवस्था पूरी तरह गुरूकुलों पर आधारित थी। प्राचीन भारत की शिक्षा का प्रारम्भिक रूप ऋग्वेद से देखा जा सकता है।

शिक्षा, समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इन्हीं सब बातों को आधार मानकर हमारे महापुरूषों ने शिक्षा संबंधी अपने विचार प्रकट किये जिनमें एक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भी थे तथा तिलक के शैक्षिक विचार नई शिक्षा नीति से मेल खाते है अर्थात आपसी सम्बंध स्थापित करते है।

अध्ययन का उद्देश्य

- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों का नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों तथा नई शिक्षा नीति की समसामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, शिक्षक–छात्र संबंध, शिक्षक के स्वरूप, विद्यालय के स्वरूप आदि का नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

नई शिक्षा नीति से संबंधित महत्वपूर्ण

उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। सुखी जीवन जीने के लिए तैयार होने के लिए एक बच्चे के विकास में शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण तत्व है। 21वीं सदी में 1986 के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बदलाव जुलाई 2020 में हुआ और यह नई शिक्षा नीति 2020 के रूप में सामने आई।

भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना जन्मसिद्ध अधिकार है। सुखी जीवन जीने के लिए एक बच्चे के विकास में शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण है। वर्तमान में 1986 के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बदलाव जुलाई 2020 में हुआ और यह नई शिक्षा नीति 2020 के रूप में सामने आयी।

102 मापांक को 5334 मॉडल द्वारा बदल दिया गया है। यह निष्पादन कुछ इस प्रकार से किया जाएगाः

फाउंडेशनल स्टेज दृ इसमें तीन साल की प्री–स्कूलिंग अवधि शामिल होगी।

प्रारंभिक चरण दृ यह 8–11 वर्ष की आयु के साथ, कक्षा 3–5 का गठन करता है।

मध्य चरण दृ यह 11–14 वर्ष की आयु के साथ , कक्षा 6–8 का गठन करेगा।

माध्यमिक चरण दृ यह 14–19 वर्ष की आयु के साथ, कक्षा 9–12 का गठन करेगा। इन चार वर्षों को बहु–विषयक अध्ययन के लिए विकल्प के साथ जोड़ा जाएगा। अब केवल एक अनुशासन में अध्ययन करना आवश्यक नहीं होगा।

छात्रों को केवल तीन बार, यानी कक्षा 3, कक्षा 5 कक्षा 8वीं में परीक्षाएं देनी होंगी।

"परख", निकाय की स्थापना की जायेगी जो छात्रों के प्रदर्शन का आकलन करेगा।

शोध विधि

शिक्षा के दो पक्ष होते है – सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक। शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष का विकास तथा सुधार वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा किया जाता है और सैद्धांतिक पक्ष का विकास दार्शनिक अनुसंधान कार्यो द्वारा किया जाता है।

शिक्षा से जुड़े समस्त प्रश्न अन्ततः दर्शन के ही प्रश्न होते है इसलिए हमें अपनी शैक्षिक समस्याओं का समाधान भारतीय दर्शन एवं भारतीय संस्कृति के आधार पर ही खोजना चाहिए और इस कार्य के लिए अनुसंधानकर्ता को ''दार्शनिक विधि'' का ही प्रयोग करना चाहिए। प्रस्तुत शोध समस्या में दार्शनिक विधि का प्रयोग किया जायेगा।

बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों तथा नई शिक्षा नीति में समानता

- बाल गंगाधर तिलक एक धर्म की शिक्षा प्रदान करने के पक्षधर नहीं थे। वे धर्म को सांप्रदायिकता से अलग रखना चाहते थे। नई शिक्षा नीति में धर्म निरपेक्षता पर बल दिया गया है।
- बाल गंगाधर तिलक के अनुसार शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए वही नई शिक्षा नीति में भी मातृभाषा की बात कही गयी है।
- तिलक ने शिक्षा में तकनीकी शिक्षा को शामिल करने पर बल दिया है । वही नई शिक्षा नीति में शैक्षिक क्षेत्र में तकनीकी शिक्षा को बढावा दिया गया है।
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीय शिक्षा पर बल दिया है वही नई शिक्षा नीति में भी एकीकृत शिक्षा की बात कही गयी है।
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अध्यापक शिक्षा पर जोर दिया है वही नई शिक्षा नीति में भी अध्यापक शिक्षा की महत्ता स्पष्ट की गयी है।
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया है, नई शिक्षा नीति में भी छठी कक्षा से बालक को प्रोफेशनल और स्किल की शिक्षा देने की बात कही गयी है ताकि बालको को अच्छे रोजगार के अवसर मिल सके।
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने छात्र जीवन में अनुशासन व शिष्टाचार पर जोर दिया वही नई शिक्षा नीति के तहत यूपी बोर्ड से संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में विद्यार्थियों को अब शिष्टाचार व अनुशासन पर भी अंक मिलेगे।
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने तत्कालीन सरकार को शिक्षा पर सरकारी व्यय बढाने की बात कही तो वही नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत भी शिक्षा क्षेत्र पर सकल घरेलू उत्पाद के 6: हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है।

बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता

तिलक के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करने के बाद शोधकर्त्ता ने पाया कि इनके विचारों की वर्तमान युग में बहुत उपादेयता व प्रासंगिकता है जिनको निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर जाना जा सकता है –

- बाल गंगाधर तिलक द्वारा किए गए समाज सुधार कार्यों जैसे– स्त्री शिक्षा, मद्य निषेध, राष्ट्रवाद, जन शिक्षा आदि कार्य वर्तमान भारतीय समाज में प्रासंगिक हैं तथा आज भी उनकी बहुत आवश्यकता है।
- बाल गंगाधर तिलक के अनुसार शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए क्योंकि मातृभाषा द्वारा ही संपूर्ण राष्ट्र को अच्छी तरह शिक्षित किया जा सकता है।
- बाल गंगाधर तिलक का मानना था कि वर्तमान शिक्षा के पाठ्यक्रम में आदर्शों, परंपराओं, रीति–रिवाजों व नैतिक मूल्य को स्थान दिया जाना चाहिए क्योंकि वर्तमान समय में विद्यार्थियों में इन मूल्यों का पतन होता जा रहा है।
- तिलक ने सांसारिक विषयों के साथ–साथ आध्यात्मिक विषयों के अध्ययन पर भी बल दिया जो वर्तमान समय में सार्थक है। क्योंकि आज के युग में आध्यात्मिक विचारों का पतन होता जा रहा है।
- बाल गंगाधर तिलक ने लोकतंत्र की सफलता हेतु राजनैतिक शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया। तिलक का मानना था कि राजनैतिक शिक्षा द्वारा नागरिकों को अपने अधिकारों व कर्तव्यों के बारे में पता चलेगा।
- बाल गंगाधर तिलक ने हिंदी भाषा को पूरे देश में प्रतिष्ठित करने का भरसक प्रयास किया। क्योंकि वर्तमान भारत के नागरिक पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति की ओर भाग रहे हैं तथा अंग्रेजी भाषा को अधिक महत्व दे रहे है, ऐसे में तिलक ये विचार उपयोगी तथा प्रासंगिक हैं।
- बाल गंगाधर तिलक ने गुरु का जो आदर्श स्वरूप प्रस्तुत किया उसकी आज के युग में बहुत आवश्यकता है क्योंकि वर्तमान युग में शिक्षकों मैं भी नैतिकता का पतन हो रहा है।

- बाल गंगाधर तिलक के अनुसार विद्यार्थियों को भी चरित्र निर्माण हेतु नैतिक शिक्षा देना अति आवश्यक है, क्योंकि वर्तमान समय में विद्यार्थियों में भी नैतिक गुणों का पतन होता जा रहा है।
- बाल गंगाधर तिलक ने जन शिक्षा को महत्व प्रदान किया। आज अशिक्षित लोग देश के उत्थान के बारे में नहीं सोच सकते। इसलिए साधारण जनता को शिक्षित करना आवश्यक है।
- बाल गंगाधर तिलक के अनुसार बालक की शिक्षा प्राकृतिक ढंग से होनी चाहिए। इससे बालक, प्रकृति तथा वातावरण के बीच सामंजस्य स्थापित होगा और बालक वास्तविक जीवन का ज्ञान प्राप्त कर सकेगा।
- बाल गंगाधर तिलक एक धर्म की शिक्षा प्रदान करने के पक्षधर नहीं थे। वे धर्म को सांप्रदायिकता से अलग रखना चाहते थे।
- पढ़ना–लिखना सीख लेना ही शिक्षा नहीं है। शिक्षा को जीविकोपार्जन के योग्य होना चाहिए।
- शैक्षिक पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा के साथ–साथ औद्योगिक तथा प्राविधिक शिक्षा को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- तिलक ने शिक्षा में तकनीकी शिक्षा को शामिल करने पर बल दिया है ।
- तिलक ने शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है।
- तिलक शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य छात्रों में व्यावसायिक कुशलता की वृद्धि मानते थे।
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीय शिक्षा पर बल दिया है ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ० शर्मा एन० आर०, डॉ० शुक्ला ग्रीष्मा, सुश्री त्रिपाठी अल्का, ''शिक्षा सिद्धांत एवं आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा'' साहित्य चन्द्रिका प्रकाशन, पंचवटी, राजापार्क, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2007 पृष्ठ संख्या 01
2. डॉ० कच्छल रितु, डॉ. मधुबाला, डॉ. सूरजमल, ''भारतीय समाज और शिक्षा'' शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 147
3. प्रो० कमल के० एल० "भारतीय राजनीतिक चिन्तन" राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, चतुर्थ संस्करण 2012, पृष्ठ संख्या 173.
4. डॉ० जैन पुखराज "भारतीय राजनीतिक विचारक" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स,आगरा, संस्करण 2003, पृष्ठ संख्या 176.
5. डॉ० चतुर्वेदी श्याम मधुकर, डॉ० चतुर्वेदी इनाक्षी "प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक" कॉलेज बुक हाउस, चौड़ा रास्ता, जयपुर, संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या 240
6. डॉ० नागर पुरुषोत्तम "आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन" राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, नवाँ संस्करण 2013, पृष्ठ संख्या 183.
7. http://www.gyanipandit.com
8. डॉ० फड़िया बी० एल० "आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या 122,123.
9. www.deepawali.com (Bal Gangadhar Tilak biography)
10. डॉ० पुरुषोत्तम बी० आर० "आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन" राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, चतुर्थ संस्करण, 2019, पृष्ठ संख्या 114.
11. वर्मा वी० पी० "द लाइफ एंड फिलोसॅफी ऑफ तिलक" लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, संस्करण 1978, पृष्ठ संख्या 10.
12. डॉ० पाण्डेय रामशकल "विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री" श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, ग्यारहवाँ संशोधित संस्करण, 2013, पृष्ठ संख्या 257, 258, 259.
13. डॉ० वर्मा श्रीराम "भारतीय राजनीतिक विचारक" कॉलेज बुक सेन्टर, चौड़ा रास्ता, जयपुर, संस्करण 2000, पृष्ठ संख्या 327, 328, 329.

14. www.hindikiduniya.com
15. डॉ० जैन पुखराज "भारतीय राजनीतिक विचारक" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स,आगरा, संस्करण 2012, पृष्ठ संख्या 120,121.
16. www.hindikiduniya.com
17. www.jagran.com
18. https://hi.wikipedia.org/ नई शिक्षा नीति 2020.

Corresponding Author
***मनोज कुमार,** *शोधार्थी*
****डॉ० रेवत सिंह,** *शोध निर्देशक*
श्री अग्रसेन स्नात्तकोतर शिक्षा महाविद्यालय
केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर